Journal *de* Brahmavart
Volume one ,Issue one
ISSN 2394- 6326

Quarterly Published by
Brahmavart Research Institute
7A/1 Aman Patel Complex
Vishnupuri Kanpur U.P. India

dkuij e e/;dkyhu ,o vk/kfud Lekjd

डॉ. अशोक कुमार तिवारी
विभागाध्यक्ष प्रतिरक्षा अध्ययन विभाग
वी.एस.एस.डी. कॉलेज कानपुर
एवं पायल त्रिवेदी
छात्रा इतिहास विभाग
वी.एस.एस.डी. कॉलेज कानपुर

A. ekrh>hy& अंधकार को पीछे छोड़कर जैसे ही सुबह अपने पंख फैलाना भुारू करती है, मोतीझील में जिंदगी की आमद–रफ्त भुारू हो जाती है। सुबह के पहले चरण अर्थात चार से पाँच के बीच घोड़े से लोग यहाँ त ारीफ लातें है। खुली हवा, बगुलो और बतखों की फड़फड़ाहट, झील के पानी में उगता सूरज, सभी को ताजगी से भर देता है। चहल कदमी भुारू हो जाती है। जी हाँ इस वक्त ज्यादातर वे लोग होते है जो 'स्पीड वॉक' नहीं करते हैं। इन आने वालों में ज्यादातर आपस में परिचित होते है और कुछ घर की, कुछ जग की हल्की फुल्की बातें भी होठों से दिल तक पहुंचती है क्योंकि सभी दिल वाले लोग है और अपने दिलों को ताजगी देने के लिए ही तो यहाँ आते है। मोतीझील में दूसरी ि ाफ्ट पाँच बजे और फिर तीसरी शिफ्ट छैः बजे एवं अन्तिम शिफ्ट पाँच बजे प्रारम्भ होती है। आयु वग्र, रात्रिकालीन कार्य या फिर सोने–जागने की वि ि ाश्ट आदतों के कारण अपने–अपने समयानुसार लोग आते है। तीसरी शिफ्ट में हम भी है। पिछले 30 वर्शो से यहाँ आने के कारण मोतीझील के कई रंग–रूप हमारी आँखों ने भी देखे है।[63] कुछ परिवर्तन भी आयें है– जैसे कि आज दस–बारह साल पहले प्रातःकालीन टहलने वालों में महिलाओं की संख्या बहुत कम होती थी। जो महिलाएँ आती थी वे अधिकतर अपने पतियों के साथ होती थी। तब युवतियों की संख्या नगण्य होती थी। इधर के वर्शो में देख रहा हूँ कि युवतियां और वह भी अकेले आना वाले की संख्या बढ़ी है। कम आयु की लड़कियाँ भी

[63] bVjuV }kjk miyC/k tkudkjh d vk/kkj ij dkuij fdru jx fdru :i* y[k fnukd 20-02-2008

मार्निंग वाक में रूचि ले रही है। जहाँ तक मुझे लगता है, स्वास्थ्य के प्रति सकारात्मक सचेतता के कारण ऐसा हो रहा है और यह अच्छा भी है। प्रातःकालीन भ्रमण के समय महिलाओं के लिए अनुकूल सुरक्षित वातावरण भी उनके यहाँ आने को प्रोत्साहित करता है।[64] व्यक्तित्व निर्माण में कई सकारातमक दृश्य ऊर्जा का संचार करते है। ऐसा ही एक दृश्य मेरी ऊर्जा का स्रोत बनता है जब हाफ पैंट–टी भार्ट पहने एक वृद्ध को अपने दोनों कंधो पर टंगे झोलो में से निकाल–निकाल कर बतखों को सुबह का ना ता कराते देखती हूँ। मैं और बतखें दोनों ही उन सज्जन का नाम नहीं जानते लेकिन हमारी और बत्तखों की आँखें उनके आने तक, उन्हें खोजती रोज ही है। हाँ एक दृश्य, अब मोतीझील से गायब हो गया है। करीब दो साल पहले तक एक बुजुर्ग सरदार जी अपने घर से रोटियाँ लाकर पशु–पक्षियों को रोज खिलाया करते थे। उनका कार्यक्षेत्र तुलसी उपवन के सामने, जापानी गार्डन का गेट था। साथ ही वह मिलने वालों से भी बची हुई रोटियाँ लाने की इल्तजा करते थे। इधर वह नहीं दिख रहे हैं।[65] मोतीझील की जीवंतता में मक्खन, ब्रेड, मट्ठा, अंकुरित अनाज, करेला और आंवले के रसों का महत्व भी कम नहीं है। यही नहीं अशोक नगर की ओर बनारसी चाय की दुकान भी मोतीझील की संस्कृति का एक हिस्सा है। मोतीझील में टहलने वालों में से कुछ लोग यहाँ की भीड़–भाड़ से ऊब कर सी0एस0ए0 की ओर चले गए हैं, उनका कहना है यहाँ सुकून कम हो गया है।[66] अतः आज से करीब दस–बारह साल पहले मोती झील एक अच्छा फूड प्वाइंट हुआ करता था। स्वीट इंडिया और 'भोग' रेस्ट्रा में भोजन एवं स्नैक्स दोनों की सुविधा भी वही अशोक नगर की ओर, व्यायामशाला के निकट भाहं ााह नाम के फास्ट फ्रूड सेंटर है और वॉक वे के अंदर भी दो स्नैक्स हट थी। न जाने किसकी नजर लगी और सारे फूड प्वाइट्स का सूपड़ा साफ हो गया। दुनिया के तमाम तफरीहगाहों (पान प्वाइंट्स) में से भाायद मोतीझील ही ऐसी ही बदकिस्मत जगह है जहाँ कोई फूड प्वाइंट नही है। कानपुर की तरक्की चाहने वाले हुक्मरानों और यहाँ के राजनैतिक नुमाइदों से गुजारि ा है कि इस ओर भी थोड़ा सोचे।[67] भााम को मोतीझील तफरीह करने वालों की है। कानपुर में कही टहलने–घूमने की तला ा भी तो मोतीझील में ही आकर खत्म होती है। यहाँ कारगिल पार्क, राजीव वाटिका, तुलसी उपवन और जापानी गार्डन तथा मोतीझील क्षेत्र का फैला हुआ विस्तार, झूले, चाट, आइसक्रीम, पॉपकार्न, भुट्टे, नारियल पानी आदि के खोमचे, इन्हें सबसे तो बच्चों और खुद का मन बहलाना पड़ता है। कुछ मेले– तमा ो भी यहाँ के मैदानों में लगते है तो कभी–कभी लाजपत भवन में सांस्कृतिक कार्यक्रम और जादू के खेल भी गर्मियों की छुट्टियों में होते है।[68] यहाँ भााम को आने वालों से पूछा जाए कि उन्हें मजा आया कि नही तो एक जवाब सहज हो सकता है कि 'जाएं तो जाएं कहाँ'। यह व्यंग्य नही है बल्कि कानपुर का दर्द है कि पचास लाख की आबादी वाले भाहर कानपुर जिसे उत्तर प्रदे ा की आर्थिक राधानी कहा जाता है में भी अभी तक एक सुव्यवस्थित पर्यटन स्थल का विकास नही हो पाया है। भााम और दोपहर के वख्त मोतीझील में मुहब्बतें भी परवान चढ़ती हैं।

---

[64] nhf{kr] vydk inhi }kjk laikfnr ^lyke dkuiqj*] mRd'k vdkMeh dkuiqj] 2010] i`t&20
[65] dUnh; iqLrdky; Qwyckx ls ikIr tkudkjh ds vk/kkj ijA
[66] nhf{kr] vydk inhi }kjk lEikfnr ^dkuiqj dh HkXu fojklr*] dkuiqj] 1998] i`t&21
[67] bVjuV }kjk miyC/k tkudkjh ds vk/kkj ij dkuiqj fdrus jax fdrus :i ys[k fnukd 20-02-2008
[68] nhf{kr] vydk inhi }kjk lEikfnr ^dkuiqj dh HkXu fojklr*] dkuiqj] 1998] i`t&41

रूठने–मनाने का खेल भी होता है और दोपहर के वख्त तो खास तौर से झगड़े निपटाने वाले प्रेमी परिन्दे मोतीझील के सन्नाटे को तोड़ते हैं। इसमें कोई बुरी बात नहीं है क्योंकि जहाँ जीवन होगा वहाँ प्रेम का होना सहज स्वाभाविक है। कॉलेजों आदि के क्लास बंद करके आए प्रेमी परिन्दे पुलिस और यहाँ के लिए 'वसूली' का जरिया भी बन जाते है। वसूली को लेकर गार्डो और पुलिसवालों में कभी–कभी तकरार भी होती है लेकिन मामला जल्दी सुलझ भी जाता है। मोतीझील का सफर खत्म करने से पहले अव्यवस्था की भेंट चढ़े म्यूजिकल गार्डन को याद करते हुए अशोक स्तम्भ को सैल्यूट करती हूँ और मोतीझील को जीवंत बनाए रखने वालों को अपना सलाम पेश करती हूँ।[69]

B. nfoM+ ijEijk dk egkjkt i`;kx ukjk;.k f'kokyk& भारत की वास्तु कला परम्परा में मंदिरों की महत्वपूर्ण भूमिका है। कानपुर नगर में भाास्त्रीय वस्तु कला में निर्मित केवल दो मंदिरों की गणना की जाती है। प्रथम है बड़ा चौराहा पर स्थित महराज प्रयाग नारायण मंदिर शिवाला एवं दूसरा है लाजपत नगर में स्थित राधा कृशण मंदिर जो उसके निर्माता कमलापति–जुग्गीलाल के संक्षिप्त रूप में जे0के0 मंदिर नाम से विख्यात है।[70] शिवाला दृविड़ भौली का मंदिर है जबकि जे0के0 मन्दिर नागर भौली में है। एक प्राचीन है तो दूसरा नवीन है। शिवाला मन्दिर वैशणव धर्म की वैखास परम्परा में रामानुज भााखा का एक तीर्थ स्थल है क्योंकि यहां समस्त अलवारों (दक्षिण के वैशणव संत) की मूर्तियों की स्थापना है एवं मुख्य आराध्य देव लक्ष्मी नारायण को स्थापित करने का कार्य आचार्य रामानुज ने स्वयं के द्वारा स्थापित श्री सम्प्रदाय के अर्न्तगत किया था। इसी सम्प्रदाय में आगे चलकर रामानन्द ने लक्ष्मी नारायण मन्दिर के प्रांगण में ही डा0 बद्रीनारायण तिवारी प्रत्येक वर्श मानस संगम का वृहद आयोजन दिसम्बर के अंतिम रविवार को करते हैं एवं उसमें एक सप्ताहपूर्व रामकथा का आयोजन प्रारम्भ हो जाता है जिसे मुग तुलसी पं0 रामकिंकर ने प्रारम्भ किया था एवं वर्तमान समय में उन्हीं रामायणज्ञ के शिष्य पं0 उमा ांकर व्यास द्वारा संचालित किया जा रहा है।[71] सर्वप्रथम, मैं शिवाला मन्दिर की वस्तु भौली का वर्णन करना चाहूँगी। द्रविण भौली का प्रमुख आकर्शण होता है उसका गोपुरम। मंदिर एक परिसर के केन्द्र में होता है एवं परिसर के प्रमुख द्वारा के शिखर जैसी आकृति का निर्माण किया जाता है जिसे गोपुरम कहते हैं। गोपुरम का आकार पिरामिड भौली का होता है। मंदिर के गर्भगृह के ऊपर शिखर का निर्माण होता है। यह भी पिरामिड़ भौली का होना चाहिए लेकिन शिवाले में यह तत्कालीन प्रचलित मराठा भौली का है। इसके अतिरिक्त एक मात्र महिला अलवार (गोदम्मा) की मूर्ति की स्थापना, मन्दिर प्रांगण के कल्याण मंडप में की गई है। विश्णु के वाहन गरूण की मूर्ति की स्थापना भी द्रविड़ भौली का प्रमुख तत्व है। लक्ष्मी नारायण की स्थापना के कारण शिवाला मंदिर को बैकुण्ठ मंदिर भी कहते हैं।[72] द्रविड़ भौली का प्रारम्भ दक्षिण भारत में पल्लव भाासकों के काल में हुआ था जिसमें निरन्तर विकास होता रहा। चोल, पाण्ड्य, होयसल, विचज नगर एवं नायक राजवं ाों ने इस भौली को गति प्रदान की। चोलों एवं पाण्डयों के समय व्यापक मात्रा में दक्षिण भारत में गोपुरम के निर्माण हुये। विजय नगर भाासकों ने द्रविड़ भौली के मंदिरों में मंदिर परिसर बनाना प्रारम्भ किया एवं उसमें बाजार को भी जोड़ा। यह विशेषता शिवाला मंदिर में भी देखने को

---

[69] nhf{kr] vydk inhi }kjk likfnr ^lyke dkuiqj*] mRd'k vdkMeh] dkuiqj] 2010] i`t&21
[70] **Survey report of KDA, Page-10-83**
[71] nhf{kr] vydk inhi }kjk likfnr ^dkuiqj dh HkXu fojklr*] dkuiqj] 1998] i`t&51
[72] **Final Survey report of JNNURM, Page-100**

मिलती है। इसी प्रकार से विजय नगर परिसरों ने मंदिर के अधिश्ठाता देवता की विवाह परम्परा का प्रारम्भ किया जो कि कानपुर के शिवाला में भी यथावत संचालित है।[73] इस मन्दिर का निर्माण 1857 से आरम्भ होकर 1861 तक चला। आज से लगभग 200 वर्श पूर्व मकरद नगर कन्नौज निवासी परम वैश्णव भक्त परांकु ा जी के सुपुत्र महाराज रेवती राम तिवारी ने कानपुर नगर के पठकापुर मोहल्ले को अपना कार्यस्थल चुना। उन्होंने अपने ईश्टदेव श्री रूक्मिणी कृश्ण भगवान का विग्रह सर्वप्रथम पटकापुर में स्थापित किया तथा अपने पुत्र के नाम फर्म रेवतीराम प्रयाग नारायण व्यवसायिक संस्थान के नाम से कलकता में मुख्यालय बनाकर ब्रिटिश भाासनकाल में कमसरियेट का काम भाुरू किया। जब व्यवसाय अपने चरमोत्कर्श पर चल रहा था तभी उनके मन में नगर में दक्षिण की भौली के वैश्णव मंदिर के निर्माण कराने का संकल्प आया। फलतः उन्होंने अपनी आय का द ांस भाग लगाकर तथा अन्न त्याग कर फलाहारी रहकर मन्दिर निर्माण कराने का संकल्प लिया और काम भाुरू करा दिया। परन्तु इसे विधि की विडम्बना ही कहा जायेगा कि दो वर्श के अन्दर ही 52 वर्श अल्पायु में महाराज रेवतीराम तिवारी का सन् 1859 में निधन हो गया। उनके आकस्मिक निधन के बाद यह संकल्प महाराज प्रयाग नारायण तिवारी ने लिया और इसे अपनी देखरेख में पूर्ण कराया।[74] सन् 1861 में निर्मित हुए प्राचीन मन्दिर में मुख्य प्रतिमा भक्त वत्सल भगवान श्री नारायण अर्थात् भगवान श्री विश्णु जी, श्री रंगनाथ जी है। इन सभी देवी–देवताओं की सवारी वर्श में कई बार निकलती है। मंदिर में स्थापित देवी–देवताओ की सभी प्रतिमायें दक्षिण भारत के ही श्रीरंगम् से लायी गयी है। दक्षिण भारत के 12 आचार्यो में चार आचार्यो की प्रतिमायें यहाँ स्थापित है। जिनमें रामानुजाचार्य परफाल स्वामी, बरबर मुनि और स्वामी सठकोपाचार्य प्रमुख है।[75] प्रयाम नारायण शिवाला परिसर में दो वि ााल नगाड़े रखे हैं जिनको पूजन अर्चन के बाद बजाया जाता है। यह नगाड़े कानपुर के स्वतंत्रता के गवाह है। नानाराव पेशवा के सैनिक 1857 के स्वातन्त्रय–समर में इन्ही नगाड़ों से युद्ध की मुनारी खास–ओ–सम को सूचना देने के लिए प्रयोग करते थे। इस मंदिर में प्राण प्रतिश्ठित देवी–देवताओं की पूजा अर्चना नित्य दक्षिण भारतीय पूजन पद्धति पांच रात्रि विधि से तमिल तथा संस्कृत में की जाती है। इस मंदिर में पिछले 148 वर्शो से निरन्तर अखण्ड ज्योति व यज्ञ वेदी में 'अखण्ड अग्नि' प्रज्जवलित है जिसके द र्न के लिए दूर–दूर से लोग आते है। ब्रिटि ा काल में ट्राम में बैठकर नित्य प्रातः सरसैया घाट जाकर स्नान करने वाले गंगा मैया के हिन्दू भक्त लौटकर इसी प्रयाग नारायण शिवाला में दर्धन के लिये उमड़ते थें। मन्दिर में वर्श पर्यन्त छोटे–बड़े लगभग 35 उत्सव होते है जिसमें माघी पूर्णिमा पर होने वाला वार्शिकोत्सव प्रमुख है जो दस दिवसीय होता है। इसमें 30 दिवसीय पोंगल उत्सव प्रमुख है जिसे यहाँ खिचड़ी उत्सव कहते हैं। इसके अलावा पांच दिवसीय श्री बैकुण्ठोत्सव, बंसतोत्सव, विजय द ामी, दीपावली, जन्माश्टमी, नक्षत्रोत्सव, श्री रामनवमी, श्री जयन्ती, श्री वामन जयन्ती, श्री रामानुज जयन्ती

---

[73] nhf{kr] vydk i;nhi }kjk l:ikfnr ^dkuiqj dh HkXu fojklr*] dkuiqj] 2010] i`t&52

[74] **Survey report of KDA, Page-10-84**

[75] flag] geyrk }kjk l:ikfnr ^ikIlhfcyhVht vkQ VfjTe bu dkuiqj foFk Li`s'ky fjQjsal Vw vkjphvkyksthdy lkbV~l bu dkuiqj*] bfrgkl foHkkx] oh0,l0,l0Mh0 dkWyst] dkuiqj] 2009] i`t&112

पर भी उत्सव होते है। करीब 6 एकड़ में फैले इस मन्दिर की सारी व्यवस्था भक्तवत्सल श्री नारायण ट्रस्ट शिवाला, कानपुर करता है।[76]

C. gu|eku efnj ¼iudh½& भगवान हनुमान का मंदिर इस क्षेत्र में सबसे लोकप्रिय मंदिरों में से एक है। देश भर से भक्त इस मंदिर के द र्न के लिये खीचे चले आते हैं क्योंकि लोगों की ऐसी मान्यता है कि भगवान इस मंदिर में लोगों की सभी इच्छाओं को पूर्ण करते हैं। इस मंदिर की ऐसी मान्यता है कि जो पूरी श्रद्धा और भक्ति के साथ यहाँ आता है भगवान के आशीर्वाद की वर्शा उसके ऊपर जरूर होती है। भगवान हनुमान हमेशा आगंतुकों को अपना आ ीर्वाद देते हैं। यह मंदिर एक महान ऊँचाइयों के साथ एक विशाल भूमि पर बना है। इसके साथ–साथ एक विशाल 'कुम्बास' का काम निर्माण के तहत है। वहाँ पूर्व, उत्तर और पश्चिम पक्षों से मंदिर के लिये तीन प्रवेश द्वारा है और मंदिर की दूरी से ही एक भाानदार नजारा है।[77] सार्वजनिक प्रतीति के अनुसार, एक बार महंत ने कहा था कि मंदिर के इतिहास के बारे में कोई प्रमाणिक सबूत उपलब्ध नहीं है, पर अभी तक पौराणिकता के अनुसार मंदिर लगभग तीन सौ से 400 साल पुराना है। हालांकि यह मंदिर महंत श्री श्री 1008 पुरूशोत्तम दास जी महाराज द्वारा स्थापित किया गया था। जनमाश्टमी के भाुभ अवसर पर 'कान्हपुर' नामक एक गाँव की नींव (कानपुर वर्तमान) रखी जो राज हिंदू सिंह के भाासन की तुलना में बड़ी है। सार्वजनिक प्रतीति के अनुसार, एक बार एक समय पर महंत श्री श्री 1008 पुरूशोत्तम दास जी महाराज चित्रकूट की तीर्थ यात्रा पर गये थें। बैलगाड़ी से यात्रा करते समय महंत पुरूशोत्तम दास जी महाराज ने चित्रकूट के पास सुबह की प्रार्थना के लिये बैलगाड़ी को रोक दिया और प्रार्थना पूरी होते ही जैसे ही अपनी यात्रा पर आगे बढ़ने के लिये तैयार हुये तो एक पत्थर से ठोकर खा गये।[78] उन्हें आश्चर्य हुआ कि वह पत्थर भगवान हनुमान की मूर्ति थी। परमात्मा अंतर्ज्ञान से वह हनुमान जी की मूर्ति अपने साथ ले जाना चाहते थे। इस दिव्य दिशा के साथ महंत ने मूर्ति उठायी और पूरी श्रृद्धा के साथ अपनी बैलगाड़ी में रखी और बिठूर के प्रति अपनी यात्रा जारी रखी जो कानपुर भाहर का पर्यटन स्थल है और भाहर से 10 कि0मी0 की दूरी पर है। यात्रा के कुछ दिनों बाद बिठूर से सिर्फ दस कोज दूर (लगभग 15 कि0मी0) एक काफिले में पहुँचने के बाद महंत ने पाया कि बैलगाड़ी भी अब चलना बंद हो गयी थी क्योंकि बैल अब भार नही उठा पा रहे थे। इस कारण महंत ने वहीं पर रूककर बैलों को थोड़ी देर आराम करने के लिये छोड़ दिया। इसी के साथ–साथ महंत ने भी दिन के प्रकाश में एक झपकी ले ली। झपकी लेते समय भगवान ने उन्हें एक दिव्य दिशा प्रदान की जिसमें उन्होंने महंत को मूर्ति वहीं पर स्थापित करने का आदेश दिया। महंत ने एक दिव्य आदेश के रूप में इसे समझा और स्थानीय लोगों की मदद से मूर्ति उसी स्थान पर स्थापित कर दी जहाँ वे ठहरे थे। यह जगह अब पनकी के रूप में जानी जाती है। तब से स्थानीय लोगों ने उस स्थापित जगह पर भगवान हनुमान जी की पूजा भारू कर दी। आने वाले समय में एक छोटा सा मंदिर स्थानीय लोगों की मदद से स्थापित हुआ और यह मंदिर भगवान हनुमान के पनकी मंदिर

---

[76] nhf{kr] vydk inhi }kjk likfnr ^dkuij dh HkXu fojklr*] dkuij] 1998] i t&53

[77] flg] geyrk }kjk likfnr ^iklhfcyhVht vkQ VfjTe bu dkuij foFk Li ky fjQjl V vkjphvkykthdy lkbVl bu dkuij*] bfrgkl foHkkx] oh0,l0,l0Mh0 dkyt] dkuij] 2009] i t&111

[78] **Survey report of JNNURM, Page- 10-88**

के रूप में जाना जाने लगा।[79] यहाँ तक कि भक्तों द्वारा कथित वाक्य कि, 'पनकी के हुनमान जी कठिन भक्ति और पूजा से सभी इच्छाओं को पूर्ण करते है' लोकप्रिय हो गया। प्रसिद्धि चारों ओर फैल गयी और मंदिर अधिक से अधिक लोकप्रिय हो गया। अब देश भर से भक्त इस पवित्र मंदिर का दौरा कर रहे हैं। वर्तमान में, पनकी मंदिर उत्तर भारत में भगवान हनुमान के बहुत प्रसिद्ध मंदिर के रूप में जाना जाता है।[80]

D. dkuiqj eseksfj;y pp& कानपुर में इस मेमोरियल चर्च को कैथेड्रल चर्च के रूप में जाना जाता है। यह चर्च 1857 के विद्रोह में जो अंग्रेज मारे गये थे उन अंग्रेजों की यादों में बनाया गया था। इस चर्च की सबसे आकर्शक वि ोशता यह है कि ये चर्च गोथिक भौली में बनाया गया हैं इसका गिरजाघर भी अपनी पूर्व दिशा में एक स्मारक उद्यान घरों में से एक है। यह चर्च वाल्टर ग्रीनविले ईस्ट बंगाल रेलवे के वास्तुकार द्वारा डिजाइन किया गया था। गोथिक भौली में पूरा चर्च आकर्शक विचित्र ड्रेसिंग के साथ चमकदार लाल ईटो से बना है। चर्च के पूर्व में दो प्रवे ा द्वार के माध्यम से सम्पर्क किया जा सकता है जो कि एक स्मारक उद्यान है। इस चर्च को गोथिक भौली देने का श्रेय डिजाइनर हेनरी यूल को जाता है।[81]

E. ipk;ru भkSyh dk jk/kkd`श.k efUnj& मन्दिरों के बारे में कानपुर प्राचीनता एवं नवीनता का संगम है। मन्दिर निर्माण की कुल चार भौलियों में से दो भाास्त्रीय भौलियों के मन्दिर इस भाहर की भाान हैं। द्रविड़ भौली में बना शिवाला एवं पंचायतन भौली का राधा–कृश्ण मन्दिर (जे0के0 मन्दिर)। 1960 में बनकर पूर्ण हुआ यह मन्दिर भाहर के कमला नगर में स्थित है।[82] भाास्त्रीय मन्दिर निर्माण कला की मूलतः तीन भौलियाँ हैं– नागर, द्रविड़ एवं बेसर। नागर भौली का क्षेत्र उत्तर भारत है। इस भौली में कोणाकार ि ाखर का निर्माण किया जाता है जबकि द्रविड़ भौली में पिरामिडनुमा ि ाखर होते है। नागर भौली का विकसित रूप पंचायतन भौली है। इसमें नागर भौली के एक गर्भगृह के स्थान पर पांच गर्भगृह एवं शिखर होते हैं। इसी भौली का प्रयोग जे0के0 मन्दिर में किया गया है। इन पांच शिखरों में मध्य का शिखर एवं गभगृह (मूर्ति स्थापना का कक्ष) बड़ा होता है एवं भोश चारों अपेक्षाकृत छोटे होते हैं। पंचायतन भौली का आधार पंचायतन पूजा पद्धति से है जिसे आदि गुरू भांकराचार्य ने प्रारम्भ किया था। इसमें पांच देवताओं की एक साथ पूजा का प्रावधान है। पाँच देवता–विश्णु, शिव, दुर्गा, गणेश एवं सूर्य। इस प्रकार की उपासना करने वालों को 'स्मार्त' कहा गया। आगे चलकर देवताओं में सुविधानुसार परिवर्तन भी किया गया।[83]

जे0के0 मन्दिर में इस प्रकार नागर एवं पंचायतन दोनों भौलियों को अपनाया गया है। शिखर का स्वरूप नागर है जिसमें गोल पत्थरों का व्यापक प्रयोग है। इन पत्थरों को वास्तु भौली में अमलक कहा जाता है गर्भगृह के बाहर लम्बा जगमोहन अर्थात् सभा कक्षा या मंडप का प्रयोग किया गया है। मन्दिर के निर्माण में आधुनिकता एवं वैभव का प्रकटीकरण

---

[79] **Survey report of JNNURM, Page-10-89**

[80] fMfLVªDV xtfV;j vkQ ;qukbVsM izkfoUl vkQ vkxjk ,.M vo/k*] okY;we&XIX, bykgkckn] 1909] i`t &324

[81] dfUn;; iqLrdky; Qyckx ls izkIr tkudkjh ds vk/kkj ij

[82] **Survey report of JNNURM, Page10-90**

[83] flag] gseyrk }kjk lEikfnr ^ikslhfcyhVht vkQ VfjTe bu dkuiqj foFk Lis ky fjQjsl Vw vkjphvkykWthdy lkbV~l bu dkuiqj*] bfrgkl foHkkx] oh0,l0,l0Mh0 dkWyst] dkuiqj] 2009] i`t &112

इस बात से होता है कि पूर्वकालीन मंदिरों में प्रयुक्त वस्तुएँ पत्थर या फिर ईटों के स्थान पर ताजमहल से मुकाबला करते हुये राजस्थान के मकराणे के सफेद संगमरमर का प्रयोग किया गया है। दीवारों पर रामायण एवं महाभारत के दृ यों को चित्रित किया गया है। मन्दिर ने भाहर में पर्यटन को एक ऐसा 'डेस्टीनेशन' दिया है जो मन और आँखों दोनों को ही सुकून देता है।[84]

F. }kjdk/kh'k efUnj& उत्तर प्रदेश के कानपुर भाहर में द्वारकाधी ा मंदिर भगवान कृश्ण को समर्पित है। यह कानपुर के कमला टावर से सटा हुआ है। यहाँ द्वारकाधी ा का मतलब द्वारका के राजा से है। द्वारका भगवान कृश्ण का अपना हुआ घर तथा राज्य था। भगवान कृश्ण भगवान विश्णु के आठवें अवतार हैं। कानपुर के द्वारकाधी ा मंदिर में आम जन और विस्तृत अनुश्ठानों के साथ हर दिन पूजा के लिए भाुभ है। इस मंदिर का हर दिन पूजा के समय आरती के साथ ुरू होता है। श्रावण के पवित्र महिने के दौरान झूला उत्सव बड़ी धूमधाम और बड़े पैमाने पर द्वारिकाधी ा मंदिर में सभी गवाहों के साथ मनाया जाता है। इस उत्सव के दौरान मूर्ति नये कपड़े और गहनों और फूलो से सजायी जाती है। झूला भारतीय संस्कृति का एक अंतर्निहित मूलभाव है। इसके इधर–उधर गति प्रतिकात्मक खु ी और दूर सांसकारिक संलग्नक से स्वतंत्रता और दुनिया की चिंताओं से एक उड़ान के एक राज्य का प्रतिनिधित्व करने के लिये मानी जाती है। राधा और कृश्ण की पौराणिक कथायें, वि ोश रूप से बसंत महोत्सव के दौरान एक सुन्दर झूले पर बैठे चित्रित किये गये है।[85]

G. ujlgkj ?kkV& नरसंहार घाट उत्तर प्रदेश के गंगा नदी के दाहिने किनारे पर कानपुर छावनी के क्षेत्र में स्थित है। यह घाट 1857 के भारतीय सिपाही विद्रोह के बाद से ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण बन गया है। लगभग 300 ब्रिटि ा पुरूशों, महिलाओं और बच्चों की बलि के बाद पहचान पाने वाला 'नरसंहार घाट' बाद में 'सत्ती चौरा' नामक घाट से प्रसिद्ध हुआ। उस दिन क्रूर भाग्य से जो लोग बचे वो बाद में 'बीबीघर नरसंहार' में मारे गये। इस विद्रोह घाट को बाद में 'नानाराव घाट' के रूप में नाम दिया गया था क्योंकि ऐसा माना गया था कि ये विद्रोह पे ावा के नानाराव के नेतृत्व में हुआ था। आज इस नरसंहार घाट को एक छोटे सफेद मंदिर द्वारा चिंहित किया गया है।[86]

H. eDdk efLtn& भाहर से सिर्फ 15 किमी0 की दूरी पर स्थित है। यह कानपुर के प्रसिद्ध मस्जिदों में से एक है।[87]

I. tSu dkp efnj& कानपुर जो एक हलचल औद्योगिक भाहर है स्वतंत्रता के लिये भारत के संघर्श में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उत्तर प्रदे ा के भाहर जो एक गहरी सांस्कृतिक जड़े जमाये हुये हैं, अपने पर्यटक आकर्शणों में पाये जाते हैं। कानपुर के श्रद्धेय धार्मिक स्थलों के बीच जो एक वि ोश उल्लेख के काबिल है वो है जैन कांच मंदिर।[88] धर्मनिरपेक्ष जैन धर्म मंदिर, पौराणिक भगवान महावीर और भोश 23 जैन तीर्थकारों के भक्तों के लिये समर्पित है। जैन ग्लास मंदिर प्रसिद्ध कमला टॉवर के पीछे महे वरी मोहाल में

---

84 nhf{kr] vydk inhi }kjk lEikfnr ^dkuiqj dh HkXu fojklr*] dkuiqj] 1998] i`t&55

85 bVjusV }kjk miyC/k tkudkjh ds vk/kkj ij ^dkuiqj ds i;ZVu LFky* ys[k fnukad 11-09-2012

86 'fMfLVªDV xtsfV;j vkWQ ;qukbVsM izkfoUl vkWQ vkxjk ,.M vo/k*] okY;qe&XIX, bykgkckn] 1909] i`t&218

87 bVjusV }kjk miyC/k tkudkjh ds vk/kkj ij ^dkuiqj ds i;ZVu LFky* ys[k fnukad 11-09-2012

88 nhf{kr] vydk inhi }kjk lEikfnr ^lyke dkuiqj*] dkuiqj] 2010] i`t&90

स्थित है। यह मंदिर अलंकृत ग्लास और तामचीनी निर्माण से सजा है। पूरा मंदिर ग्लास से बना है। एक छत, दीवारों और फर्श पर मंदिर में चारों ओर भाानदार अलंकृत दर्पण का काम देख सकते हैं। सटीक और विस्तार के लिये एक आँख के साथ, मंदिर भी ताजा आदरणीय जैन भाास्त्रों की शिक्षाओं को सुनाने की जीवंत भित्ति चित्र कला से सना हुआ एक ग्लास का मकान है। फर्श में संगमरमर का काम किया गया है और अंदरूनी सजावटी मेहराब आगंतुकों और भक्तों के मंदिर में प्रवे ा करते ही अपनी ओर आकर्शित करते हैं। यह मंदिर जो भगवान महावीर और 23 जैन तीर्थकारों की मूर्तियों का घर है एक बड़ी पीठ पर रखा हुआ है और एक अलंकृत चंदवा से डूब रहा है।[89]

J. dkuiqj dk jko.k efnj& रावण एक राक्षस के रूप में माना जाता है और द ाहरे के अवसर पर रावण के पुतले को जलाया जाता है। लेकिन फिर भी अपनी श्रद्धा का भुगतान करने के लिये कानपुर के कई लोगों ने इस मंदिर का दौरा किया। कानपुर का प्रसिद्ध यह रावण का मंदिर साल में एक बार केवल द ाहरे के दिन द र्न करने के लिये खुलता है। सभी हिन्दू भाास्त्रों के अनुसार रावण एक अत्याधिक ज्ञानी व्यक्ति था। उसको श्रद्धांजली देने के लिये दूर–दूर से लोग द ाहरे के दिन इस मंदिर का दौरा करने के लिये आते हैं। इस मंदिर के पत्थर की नींव 1868 में रखी गई थी। यह मंदिर हमारे पूर्वजों का प्रद र्न कर रहा है, जो पांचवीं पीढी के इस मंदिर की स्थापना के दौरान यहाँ थे। वैदिक युग के दौरान रावण की अनेक घोशित कमियों के बावजूद उसकी मूर्ति को यहाँ स्थापित किया गया, वो इसलिये क्योंकि रावण एक बहुत बुद्धिमान व्यक्ति जाना जाता था। भगवान ि ाव के प्रबल भक्त को जीवंत शिव तांडव स्त्रोत की रचना का श्रेय प्राप्त है। यहीं पर कैला ानाथ मंदिर और मां भाक्ति देवी के मंदिर को रावण के मंदिर के प्रमुख अंग माने जाते हैं। नील कंठ (नीली गर्दन) पक्षी के संदर्भ में अक्सर इस मंदिर की बात आती है।[90]

K. dkl ehukj& मुगलकाल के दौरान भोर ाह सूरी ने एक सड़क का निर्माण कराया और इसी के साथ स्तम्भ के रूप में एक मीनार का भी निर्माण कराया जिसे कोस मीनार कहा गया। स्तम्भों के बीच की दूरी 1 कोस (3.2 किमी0) थी। आम तौर पर कोस मीनार एक भांख की आकृति वाले भीर्श परिधि के साथ 3 मी0 की ऊँचाई पर है। इस मीनार का निर्माण पुरानी ईटों और चूने के साथ हुआ है।[91]

L. pkd xq:}kjk& चौक का सर्वप्रथम आकर्शण किताबों व आभूशणों की थोक व फुटकर दुकाने न होकर चौक गुरूद्वारा है। गुरूतेग बहादुर ने इस स्थान में सन् 1662 में पटना से जाने के रास्ते में एक रात्रि विश्राम किया। उसी स्मृति में इस गुरूद्वार का निर्माण हुआ। प्रातः भक्तों को दूर–दूर से नंगे पैर, या दंडवत करते हुये यहाँ आते हुये देखना मात्र ही आपको गुरू का भक्त बना देता है। गुरूद्वारे में ऐतिहासिकता का कोई प्रमाण चिन्ह खोजना भूल होगी। श्रद्धा ही ऐतिहासिकता का प्रमाण है। गुरूद्वारा सिक्खों की आस्था का प्रमुख केन्द्र रहा है। यह वास्तुकला का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत करता है।[92]

M. efLtn& कानपुर में मुस्लिम समुदाय के दो धार्मिक स्थल काफी लंबे समय से प्रसिद्ध रहे हैं। उनमें से एक है– 'जाजमऊ की मस्जिद' तथा दूसारा–मकनपुर स्थित

---

89 dUnh; iLrdky; Qqyckx l ikLr tkudkjh d vk/kkj ij
90 nhf{kr] vydk inhi }kjk l ikfnr ^lyke dkuiqj*] mRd'k vdkMeh] dkuiqj] 2010] i t&89
91 dUnh; iLrdky; Qqyckx l ikLr tkudkjh d vk/kkj ij
92 nhf{kr] vydk inhi }kjk l ikfnr ^lyke dkuiqj*] mRd'k vdkMeh] dkuiqj] 2010] i t&90

'मदार ाह का मकबरा'। जाजमऊ टीले पर स्थित 'जिन्नातो की मस्जिद' जिसे निजाम हैदराबाद के वं ाज और औरंगजेब के सदरेजहाँ कुलीच खाँ ने बनवाया था। यह बात मस्जिद में लगे फारसी शिलालेख के अध्ययन से ज्ञात हुई है।[93] ऐसी जनश्रुति है कि जाजमऊ वाली मस्जिद को इन्सान ने न बनाकर जिन्नों ने बनवाया था इसलिये इस नाम 'जिन्नातो की मस्जिद' पड़ा। साथ ही मकनपुर स्थित 'मदार ाह का मकबरा' भी कानपुर में ही नही, वरन् उत्तर प्रदे ा के सामाजिक–आर्थिक जीवन में बहुत अधिक महत्व रखता है। इसमें एक मेले का आयोजन होता है जिसे 'उर्स–ए–मदार ाह' कहते हैं।[94] इस प्रकार सन् 1881 तक कानपुर में कुल 357 मस्जिदें थीं। मॉण्टगोमरी में 1848 में 7 मस्जिदें, एक मकबरा ओर दो इमामबाड़े होना लिखा है।[95]

N. fxfjt k?kj ¼pp½& ईसाई समुदाय भी वास्तुकला के क्षेत्र में पीछे नही रहा। कानपुर में होने वाले धार्मिक स्थलों के निर्माण में ईसाइयों ने भी अपना योगदान दिया। उनके द्वारा बनवाये गये (गिरजाघर) चर्च आज भी कला कौ ाल की दृश्टि से अतुलनीय हैं। 1837–38 में क्राइस्ट चर्च का निर्माण आरम्भ हुआ।[96] 1840 में चर्च को बि ाप विल्सन द्वारा पवित्र किया गया। 1859 को इसे एसपीजी को इस भार्त पर दिया गया कि प्रत्येक रविवार को इसमें एक 'इंग्लिस–सर्विस' होना अनिवार्य है। इसके साथ ही 1857 के विद्रोह के समय जनरल व्हीलर द्वारा अंग्रेज नागरिकों की रक्षा के लिये छावनी में किलेबंदी करने वाले स्थान पर 1862 ई0 में एक चर्च की नींव रखी गयी, जो 1863 में बनकर तैयार हुआ। इसे 'ऑल सोल्स मेमोरियल चर्च' कहते हैं। इस चर्च की मीनारें व उसमें की गई नक्का ाी यूरोपीय भौली की याद दिलाते हैं। इसके अलावा भी कानपुर में अनेकानेक धार्मिक स्थलों का निर्माण हुआ जिसके विशय में साक्ष्य अनुपलब्ध हैं। लेकिन इतना कहना समीचीन प्रतीत होता है कि इनमें की गई नक्का ाी एवं इसकी बनावट कला–कौ ाल व तकनीकी ज्ञान का अद्भुत उदाहरण है।[97]

O. e l kuxj dk e Drknoh efnj& घाटमपुर से भोगनीपुर की ओर जाने वाली इलाहाबाद रोड पर से दक्षिण की ओर मुक्ता देवी मार्ग की सर्पीली आकृति मंदिर प्रांगण से एकदम बाहर समाप्त होती है। जून की दोपहर के सन्नोट में मंदिर के माली–पुजारी आदि सो रहे होते हैं, परन्तु कानपुर के गजैटियर के अनुसार, 'त्रेता युग के इस मंदिर की मूर्तियाँ अपनी सजीवता के कारण जाग रही हैं।'[98] पुस्तक 'कानपुर का इतिहास' में मूसानगर को मुक्तानुगर का विकृत रूप कहा है। भारत कला उपवन वाराणसी में सुरक्षित मूसा नगर से मिली ईंट इस स्थल को प्रथम भाताब्दी ई0पू0 से जोड़ती है। मूसानगर से मिली ईंट में राजा देवमित्र द्वारा यहाँ पर अ वमेध यज्ञ किये जाने का विवरूण पूर्ण रूप से उत्कीर्ण

---

93 ykyk njxkgh yky] rokjh[k&,&ftyk dkuiqj] vthth il] dkuiqj& 1875] Hkkx&2] i`t&47
94 ykyk njxkgh yky] rokjh[k&,&ftyk dkuiqj] vthth il] dkuiqj& 1875] Hkkx&2] i`t&22
95 HkVukxj] ih0ih0] lsll vkQ bf.M;k] 1961 Hkkx&xv] mRrj in s k Li s ky fjikVZ vkQ dkuiqj flVh] i`t&22
96 flag] gseyrk }kjk lEikfnr ^ikWlhfcyhVht vkQ VfjTe bu dkuiqj foFk Li s ky fjQjsUl Vq vkjphvksykWthdy lkbV~l bu dkuiqj*] bfrgkl foHkkx] oh0,l0,l0Mh0 dkWyst] dkuiqj] 2009] i`t&115
97 dkuiqj uxj] ifjØek] i0&21
98 nhf{kr] vydk inhi }kjk lEikfnr ^dkuiqj dh HkXu fojklr*] dkuiqj] 1998] i`t&45

है।[99] डा0 आर0के0 पॉल (पूर्व अध्यक्ष इतिहास विभाग क्राइस्ट चर्च कॉलेज, कानपुर) ने इस राजा देवमित्र को कौशम्बी के सिक्कों में उल्लिखित राजा देवमित्र से जोड़ा है। प्राचीन जनश्रुतियों में राजा बलि द्वारा 11 यज्ञ किये जाने की कथा भी मिलती है। मुक्तादेवी मंदिर के मूल निर्माण का विवरण तो इतिहास से गायब है परन्तु इसको वर्तमान स्थिति में पहुँचाने का श्रेय, यहाँ की पुनर्निर्माण समिति को है।[100] पुस्तक 'कानपुर का इतिहास' में मुक्ता देवी मंदिर को पेशवाकाल में पंडित गंगाधर पुरोहित द्वारा जीणोद्धार कराये जाने एवं मराठा स्थापत्य में डालने का विवरण मिलता है।[101]

मुक्ता देवी मंदिर का मुख्य प्रवेश द्वार उत्तर की ओर एवं पूजागृह का प्रवेश द्वारा पश्चिम की ओर है। पूजा गृह में दोनों ओर बरामदे हैं।[102] मुक्तादेवी मंदिर के बारे में प्रचलित लोक कथा के अनुसार, मुक्तादेवी, पहले एक अत्याधिक रुपवान कन्या थी। उनके रूप पर उनके पिता मोहित हो गये एवं विवाह का प्रस्ताव रखा। इस ग्लानी के कारण वह कन्या देह से मुक्त होकर पत्थर की हो गई। इस प्रकार मुक्तादेवी मंदिर की स्थानपा हुई। उक्त लोकोक्ति को प्रमाणित करने के लिये ब्रम्हा की मानस पुत्री सरस्वती आसक्ति की पौराणिक कथा को लिया जा सकता है। उक्त कथा को पुरातात्विक प्रमाणों से भी जोड़ा जा सकता है। यक्ष जाति को भारतीय जाति में एक कामप्रिय खूबसूरत जाति के रूप में वर्णित किया गया है।[103]यक्ष पूजा की इस अनूठी भौली को मूसानगर व आसापास के क्षेत्र आज भी अपनाये हुए हैं।[104] इस मंदिर के प्रवेश द्वार पर पक्षीराज गरूड़ की कलात्मक प्रतिमा मान्यता की श्रेणी में हैं। इस मंदिर की कला बहुत ही आकर्शित है। मूसानगर की मुक्तादेवी की पुरातात्विक विशेषता यहाँ के लोक म्यूजियम में संग्रहित प्रथम भाताब्दी ई0पू0 से 10 वीं सदी की मूर्ति एवं फलक अवशेषों में है। पुरातत्व विभाग द्वारा संरक्षित एवं प्राकृतिक छटा से परिपूर्ण मूसानगर के द्वार अगर पर्यटकों के लिये खुल जाये तो कानपुर के लिये एक नया व्यवसाय भी बन जायेगा। इस मंदिर का भी वर्तमान समय में पुनर्निमार्ण हो रहा है। बल्कि यह कहा जाये कि इसकी सजावट भी हो रही है। इसमें गेट पर टाइल्स का प्रयोग किया गया है। टाइल्स का प्रयोग इस्लामी वस्तुकला का प्रतीक है। इसमें मंदिर के बाह्य स्वरूप में परिवर्तन होने की संभावना है। मूसानगर आने वालों के लिये यहाँ के पेड़े भी एक आकर्शण हैं। खोये में दानेदार भाक्कर व इलायची का मिश्रण प्रयोग करके इन्हें बनया जाता है।[105] मूसानगर का देवयानी तालाब एक विशेष परम्परा से जुड़ा हुआ है। देवयानी एक जाति महत्वपूर्ण पौराणिक चरित्र है जिनका विवाह राजा ययाति से हुआ था। देवयानी असुरों के गुरू भांकराचार्य की बेटी थी। लेकिन क्रोध के आवेश में वह असुरराज की बेटी भार्मिश्ठा को अपनी दासी बनाकर ससुराल ले गई थी। परिणाम स्वरूप भार्मिश्ठा भी बाद में

---

99 f=ikBh] y{ehdkUr ,oa vjkMk] ukjk;.k izlkn }kjk lEikfnr dkuiqj dk bfrgkl] dkuiqj&bfrgkl lfefr] dkuiqj 1950] i`t&302

100 nhf{kr] vydk iznhi }kjk lEikfnr ^lyke dkuiqj*] mRd'kZ vdkMeh] dkuiqj] 2010] i`t&45

101 f=ikBh] y{ehdkUr ,oa vjkMk] ukjk;.k izlkn }kjk lEikfnr dkuiqj dk bfrgkl] dkuiqj&bfrgkl lfefr] dkuiqj 1950] i`t&302

102 'fMfLVªDV xtsfV;j vkWQ ;wukbVsM izkfoUl vkWQ vkxjk ,.M vo/k*] okY;we&XIX, bykgkckn] 1909] i`t&312

103 nhf{kr] vydk iznhi }kjk lEikfnr ^lyke dkuiqj*] mRd'kZ vdkMeh] dkuiqj] 2010] i`t&46

104 f=ikBh] y{ehdkUr ,oa vjkMk] ukjk;.k izlkn }kjk lEikfnr dkuiqj dk bfrgkl] dkuiqj&bfrgkl lfefr] dkuiqj 1950] i`t&303

105 nhf{kr] vydk iznhi }kjk lEikfnr ^lyke dkuiqj*] mRd'kZ vdkMeh] dkuiqj] 2010] i`t&46

राजा ययाति की पत्नी बनी। कानपुर का निकटवट क्षेत्र ययाति की कहानी से जुड़ा हुआ है। जाजमऊ को राजा ययाति की प्राचीन राजधानी मानते हुये इसका प्राचीन नाम ययातिमऊ कहा जाता है। यह तालाब देवयानी के सौभाग्य से जुड़ा हुआ है। करवाचौथ के दिन इस तालाब पर हर वर्श सैकड़ों महिलायें चन्द्रमा को अर्ध्य देकर अपने अपने सुहाग की लंबी जिंदगानी की कामना करती हैं।[106] जल में वरूण देवता का निवास है एवं वरूण वेदों के अनुसार ऋत् अर्थात् नैतिकता के देवता हैं। इस मंदिर की कला, पौराणिक कथायें और देवयानी सरोवर तीनों ही अपनी अलग दृश्टि से खास महत्व रखते हैं।[107]

P. cgVk dk txUukFk efnj& घाटमपुर से भीतरगाँव जाने वाली सड़क पर एक छोटा सा गाँव बेहटा बुजुर्ग है। मुख्य सड़क के दायीं ओर बम्बे एवं पटरी पर मुड़ते ही भगवान जगन्नाथ की शिखर पतकाएँ दिखने लगती हैं।[108] यह मंदिर एक विशाल जगति (चबूतरा) पर स्थित है। वर्तमान मंदिर का स्वरूप प्राचीनता व नवीनता का मिश्रण है। मंदिर की वास्तु ौली प्रतिहारकालीन है जिसे मरम्मत करने के लिये कहीं–कहीं नवीनता भी दी गयी है। मंदिर के गर्भगृह में भगवान जगन्नाथ जी विद्यमान हैं। मूर्ति को एक बड़े स्तम्भ पर स्थापित किया गया है। मूर्ति के चारों ओर एक संकीर्ण प्रदक्षिणा पथ है। मूर्ति के ठीक ऊपर एक वि ोश प्रकार का पत्थर लगा है और मानसून से पहले ही टपकना प्रारम्भ कर देता है। गर्भगृह के बाहर एक छोटा सा मंडप है जिसके दाईं और बाईं ओर दो छोटी–छोटी कोठरियाँ हैं। इनमें से एक में भगवान विश्णु की भोश भाायी मुद्रा की बड़ी ही भव्य प्रतिमा है। दूसरी कोठरी में भी प्राचीन मूर्तियों के ढेर लगे हैं। ये मूर्तियाँ इतनी सुंदर है और इनमे कला का प्रयोग इतने पारम्परिक तरह से किया गया है कि इनको लोग टार्च लगाकर देखने का हर प्रयास कर चुके हैं। मूर्तियों का यह संग्रह कुशाण काल से लेकर प्रतिहार काल तक रहा है। कुशाण काल से लेकर प्रतिहार काल तक इन मूर्तियों में अद्भुत कला और ि ाल्प भाास्त्र का विविधता के साथ प्रयोग किया गया है। मंदिर के बाहर स्थित प्रांगण में प्रथम भाताब्दी का आयागपट्ट स्थित है। यह एक अनुपम कलाकृति (इसका सम्बन्ध जैन कलौ) से है।[109] मंदिर के बाहर भारी मात्रा में यत्र–तत्र प्राचीन मूर्तियाँ बिखरी हुई हैं। ऐसा लगता है कि यहाँ पर कभी व्यापक तोड़–फोड़ हुई हो और बाद में इसे संवारने का प्रयास किया गया हो। मंदिर के बायीं ओर विशाल तालाब स्थित है। (ऐसा ही तालाब निबियाखेड़ा में स्थित है)। तालाब पक्का बनाया गया था परन्तु अब टूट–फूट गया है और इसमें काई जमा हुई है। अब यहाँ पर तालाब तो है पर न ही वो सुंदर है और न ही उसमें पानी रह गया है। अब इस तालाब का बस केवल नाम ही रह गया है। मंदिर और तालाब के क्षतिग्रस्त होने के बाद भी इस जगह की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि बेहटा में प्राकृतिक सौंदर्य अपने पूरे यौवन पर दिखता है।[110]

Journal *de* Brahmavart

---

106 f=ikBh] y{ehdkr ,o vjkMk] ukjk;.k iIkn }kjk lIkfnr dkuiij dk bfrgkl] dkuiij&bfrgkl lfefr] dkuiij 1950] i t&303

107 nhf{kr] vydk inhi }kjk lIkfnr ^lyke dkuij*] mRdৃk vdkMeh] dkuij] 2010] i t&46

108 f=ikBh] y{ehdkr ,o vjkMk] ukjk;.k iIkn }kjk lIkfnr dkuiij dk bfrgkl] dkuiij&bfrgkl lfefr] dkuiij 1950] i t&64

109 flg] geyrk }kjk lIkfnr ^iklhfcyhVh t vkQ VfjTe bu dkuij foFk Li'ky fjQjl V vkjphvkykthdy lkbV·l bu dkuij*] bfrgkl foHkkx] oh0,l0,l0Mh0 dkyt] dkuij] 2009] i t&46

110 nhf{kr] vydk inhi }kjk lIkfnr ^lyke dkuij*] mRdৃk vdkMeh] dkuij] 2010] i t&48